📚 ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

ऋग्वेद मन्त्र (१.३५.४)

तुलनात्मक भाष्य एवं वैज्ञानिक विमर्श

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल
सम्पर्क सूत्र: 8756390767

🌟 ऋग्वेद मन्त्र एवं पदपाठ

मन्त्र:

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः ॥ ४

पदपाठ:

अ॒भिऽवृ॑तम् । कृ॒शनैः॑ । वि॒श्वऽरू॑पम् । हिर॑ण्यऽशम्यम् । य॒ज॒तः॑ । बृ॒हन्त॑म् । आ ।
अ॒स्था॒त् । रथ॑म् । स॒वि॒ता । चि॒त्रऽभा॑नुः । कृ॒ष्णा । रजां॑सि । तवि॑षीम् । दधा॑नः ॥४

देवता: सविता (सूर्य / प्राणस्वरूप शक्ति) | छन्द: त्रिष्टुप्

📖 शब्दार्थ की तुलना

आचार्य सायण बनाम महर्षि दयानन्द

कृशनैः

आचार्य सायण भाष्य (पौराणिक/यज्ञीय): सुवर्ण (सोने) से मण्डित।

महर्षि दयानन्द भाष्य (यौगिक/वैज्ञानिक): पदार्थों को सूक्ष्म करने वाली किरणों से।

हिरण्यशम्यम्

आचार्य सायण भाष्य: सोने की कीलों (शम्या) वाला रथ।

महर्षि alternative भाष्य: जिसमें अन्य ज्योतियाँ शमित (विलीन) हो जाती हैं।

कृष्णा

आचार्य सायण भाष्य: अन्धकारयुक्त (काले रंग के) लोक।

महर्षि दयानन्द भाष्य: आकर्षण शक्ति (Gravity) से युक्त।

रथम्

आचार्य सायण भाष्य: रथ (भौतिक वाहन)।

महर्षि दयानन्द भाष्य: रमण करने योग्य व्यापक गति-प्रणाली।

सविता

आचार्य सायण भाष्य: सूर्य देव (देवता विशेष)।

महर्षि दयानन्द भाष्य: सूर्यलोक, वायु अथवा ऐश्वर्यवान् राजा।

रजांसि

आचार्य सायण भाष्य: लोकों को (अन्धकारयुक्त)।

महर्षि दयानन्द भाष्य: लोकों (ग्रहों/पिण्डों) को।

🔤 पदों की व्याकरणिक उत्पत्ति

अभीवृतम्: 'वृतु वर्तने' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय। पाणिनीय सूत्र 'नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ' (६.३.११६) से पूर्वपद 'अभि' के इकार को दीर्घ (अभी) हुआ है। अर्थ— जो सब ओर से पूर्णतः व्याप्त है।

कृष्णा: सायण भाष्य में 'कृषेर्वर्णे' (उणादि) से 'नक्' प्रत्यय द्वारा 'काला रंग' अर्थ है; जबकि दयानन्द भाष्य में 'कृष विलेखने' धातु से 'खींचना' (आकर्षण) अर्थ सिद्ध होता है।

सविता: 'षूङ् प्राणिप्रसवे' अथवा 'षू प्रेरणे' धातु से 'तृच्' प्रत्यय। जो जगत को उत्पन्न करता है, गति देता है या प्रेरित करता है।

रथम्: निरुक्त (९.११) के अनुसार 'रमु क्रीडायाम्' धातु से निष्पन्न। 'यस्मिन् रमते'—जिसमें आनन्द लिया जाए।

💡 आचार्यों के दृष्टिकोण एवं व्याख्या

आचार्य सायण का भाष्य (आधिदैविक / पौराणिक दृष्टिकोण)

विविध किरणों वाले और पूजनीय भगवान् सविता (सूर्यदेव) अन्धकार में डूबे हुए काले लोकों का तम दूर करने के लिए अपने प्रकाश-रूपी बल को धारण करते हुए, अपने उस विशाल रथ पर आरूढ़ हुए हैं; जो चारों ओर से सोने से मण्डित है, जिसमें अनेक आकृतियाँ बनी हैं, और जिसके घोड़ों की कीलें भी सोने की हैं। यह मन्त्र सूर्य की काव्यात्मक और स्तुतिपरक महिमा को प्रकट करता है।

महर्षि दयानन्द का भाष्य (आध्यात्मिक, यौगिक एवं भौतिक दृष्टिकोण)

वह अद्भुत किरणों वाला ऐश्वर्यवान सूर्यलोक (अथवा वायु), जो अपनी विशाल आकर्षण शक्ति (कृष्णा) से पृथ्वी आदि लोकों (रजांसि) को और अपने महान बल (तविषीम्) को धारण किए हुए है। वह सूर्य अपने उस महान और रमणीय स्वरूप (रथ) में स्थित है, जो सब ओर से पूर्ण है, जिसमें वस्तुओं को सूक्ष्म बनाने वाली

किरणें हैं, और जिसके तीव्र तेज के सामने अन्य सभी ज्योतियाँ मन्द या शान्त हो जाती हैं।

🔬 मन्त्र का आधुनिक विज्ञान से समन्वय

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त (Law of Gravitation)

"कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः" — सूर्य अपनी विशाल आकर्षण शक्ति (कृष्णा) और बल (तविषी) से ही पृथ्वी और अन्य ग्रहों (रजांसि) को अपनी कक्षा में बाँधकर रखता है।

विकिरण और ऊष्मा गतिकी (Radiation & Thermodynamics)

"कृशनैः ... चित्रभानुः" — सूर्य की चित्र-विचित्र किरणें जल और पदार्थों को सूक्ष्म वाष्प में परिवर्तित करती हैं (तनूकरण)।

प्रकाशिकी (Optics)

"हिरण्यशम्यम्" — सूर्य का प्रकाश-बल इतना प्रचंड है कि ब्रह्माण्ड की अन्य सभी ज्योतियाँ उसके सामने शमित हो जाती हैं।

© ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन
प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | सम्पर्क: 8756390767